New Separate Books with Cover Page & Abstract (Year 2024)

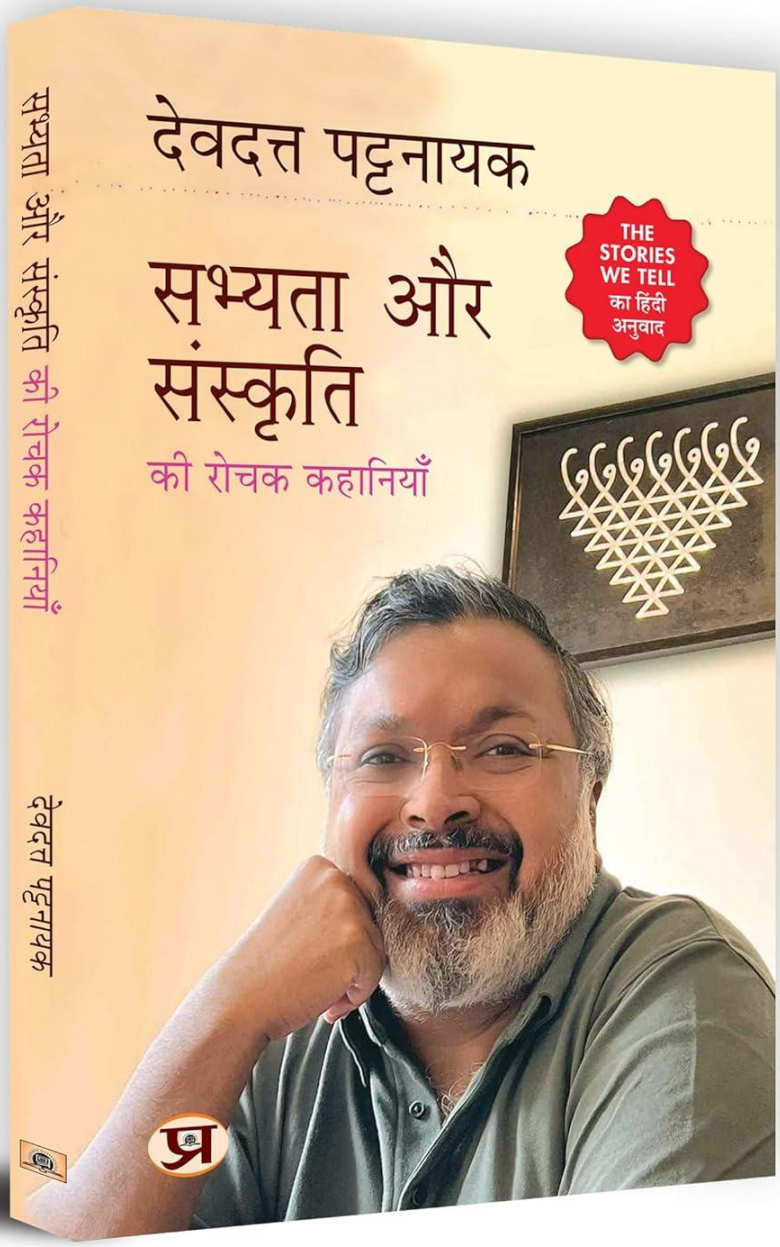

(परिग्रहण संख्या-S20701)

सारांश - वर्तमान काल के प्रसिद्ध पौराणिक विशेषज्ञ देवदत्त पट्टनायक ने इक्कीसवीं सदी में हमारे जीवन को समझाने के लिए भारत के मिथकों और किंवदंतियों के समृद्ध खजाने से शानदार कहानियाँ प्रस्तुत की हैं। कहानियों को विभिन्न विषयों में बाँटा गया है, जैसे अप्सरा, जो प्राचीन ग्रंथों में महिलाओं के निरूपण पर चिंतन है कर्म, न्याय, और हड़पना या आदान-प्रदान, जो दर्शाती हैं कि कैसे प्राचीन शास्त्रों ने न्याय के हमारे आधुनिक आदर्शों को आकार दिया है; असीम, बिना किसी शर्त का प्रेम, जो उस समानता की खोज करता है, जो दो प्रेमियों के बीच मौजूद होना चाहिए; और देव तथा असुर, जो दर्शाती है कि कैसे सही और गलत का द्विगुण काले और सफेद जितना स्पष्ट नहीं है। लेखक के वेबकास्ट 'टीटाइम टेल्ज' से उत्पन्न कहानियों का यह संग्रह उनकी अनूठी शैली में लिखा गया है और पौराणिकता हमारे जीवन को कैसे प्रभावित करती है, इस पर प्रकाश डालता है।

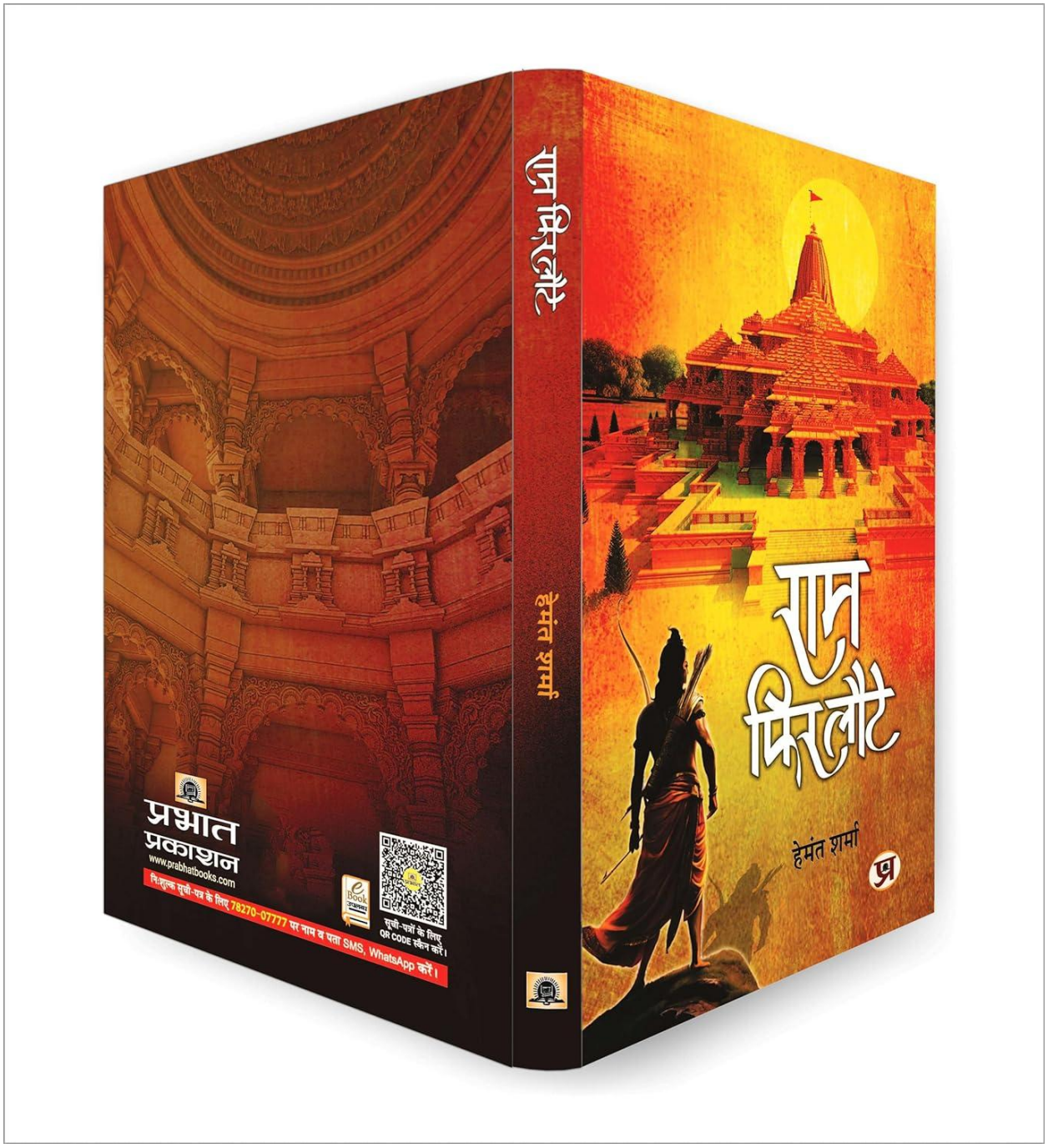

(परिग्रहण संख्या-S20700)

सारांश - राम भारत की प्राणशक्ति हैं। राम ही धर्म हैं। धर्म ही राम है। मानव चरित्र की श्रेष्ठता और उदात्तता का सीमांत राम से बनता है। कष्ट और नियति चक्र के बाद भी राम का सत्यसंध होना भारतीयों के मनप्राण में गहरे तक बसा है। हर व्यक्ति के जीवन में हर कदम पर जो भी अनुकरणीय है, वह राम है।

ऐसे राम अयोध्या में फिर लौट आए हैं। अपने भव्य, दिव्य और विशाल मंदिर में, जिसके लिए पाँच सौ साल तक हिंदू समाज को संघर्ष करना पड़ा। यह मंदिर सनातनी आस्था का शिखर है।

'राम फिर लौटे' राममयता के विराट् संसार के समकालीन और कालातीत संदर्भों का पुनर्मूल्यांकन है। राम मंदिर आंदोलन के इतिहास के पड़ावों की यात्रा करते हुए यह पुस्तक राम के उन मूल्यों को नए संदर्भों में विचारती है, जिनके कारण मंदिर राम की चेतना का नाभिकीय केंद्र बनेगा। यह उन उदात्त भारतीय जीवन मूल्यों का आधार होगा, जो तोड़ते, नहीं जोड़ते हैं।

अयोध्या के राममंदिर ने राम और भारतीयता के गहरे अंतसंबंधों को समझने का नया गवाक्ष खोला है। 'राम फिर लौटे' इसी गवाक्ष से रामतत्त्व, रामत्व और पुरुषोत्तम स्वरूप की विराटता तो नए संदर्भों में देखती है।

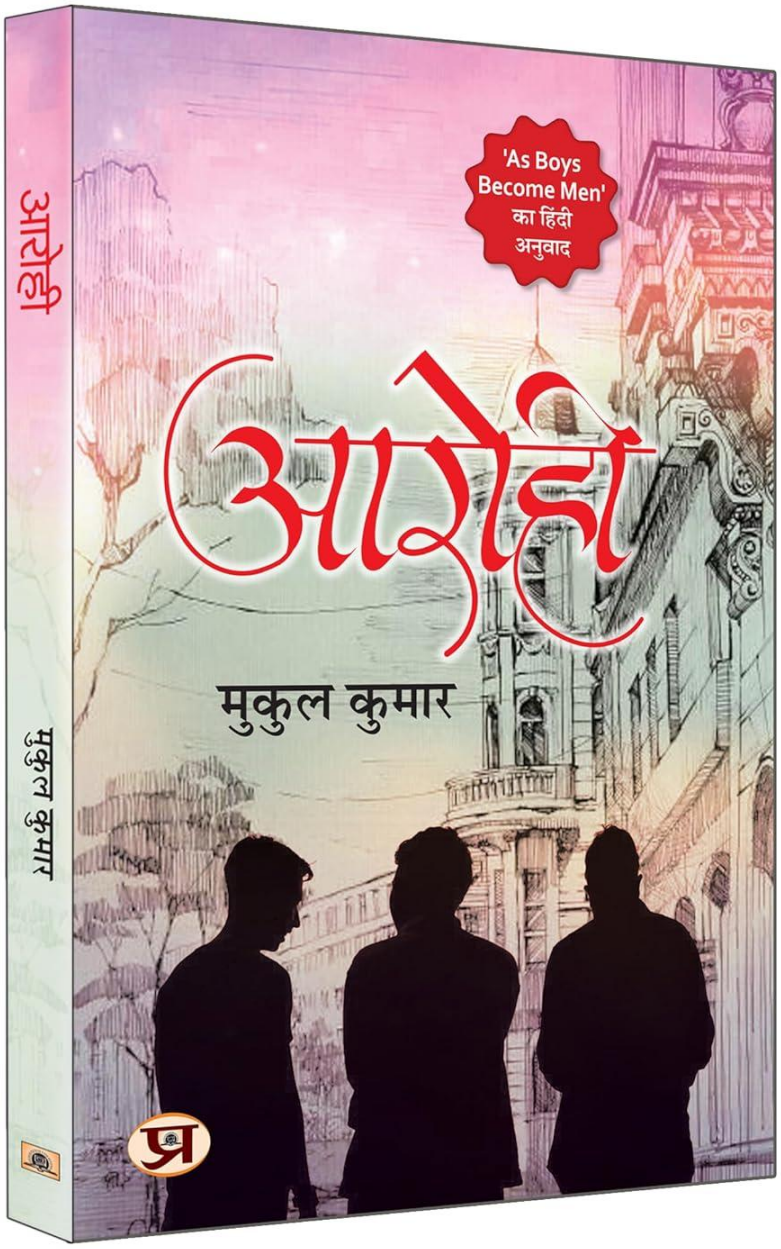

(परिग्रहण संख्या-S20699)

सारांश - यारी, यायावरी और अल्हड़पन। अकसर कुछ इसी तरह हम अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हैं। पर जो युवा बहुवांछित भारतीय सिविल सेवाओं में जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं, उनके लिए कॉलेज की जिंदगी में एक परत और जुड़ जाती है। 'आरोही' तीन ऐसे ही युवाओं— मिहिर, उदय और संदीप—के इर्द-गिर्द घूमती कहानी है, जो सिविल सेवा परीक्षा में सफल होने का संकल्प लेकर एक साथ निकले हैं। गंभीर और जुनूनी मिजाज के मिहिर की आँखों से कहानी देखते हुए हम पाते हैं कि यह पुस्तक कॉलेज की जिंदगी , दोस्ती, रोमांस, घर से निकलकर एक नए माहौल में ढलने का सफर साझा करती है, साथ ही यह दरशाती है कि धर्म और लिप्सा , प्रेम और वासना के बीच सामंजस्य का रास्ता कितना दुष्कर हो सकता है। मिश्रित मानवीय भावनाओं को चित्रित करने के लिए तीन प्रतीकों का बखूबी इस्तेमाल किया गया है— 'मोनालिसा', 'सोम' और 'शिव'।

'आरोही' एक जिंदादिल तिकड़ी के आपसी तालमेल की एक चित्ताकर्षक कहानी है , जो आपको संकल्प के ऐसे सफर पर ले जाएगी , जहाँ युवा परिपक्व होकर पुरुष और छात्र संघर्ष में ढलकर सिविल सेवा अधिकारी बनते हैं। यह पुस्तक हमें यह भी बताती है कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दौरान क्या नहीं करना चाहिए। जीवन की वास्तविकताओं के बीच से गुजरते हुए , यह बहुपरती उपन्यास व्यावहारिक फलसफे से भी रूबरू कराता हैं , जो आकांक्षी युवाओं को जीने का सलीका सिखाएगा और उनका मार्ग सूची-पत्रों के लिए प्रशस्त करेगा।

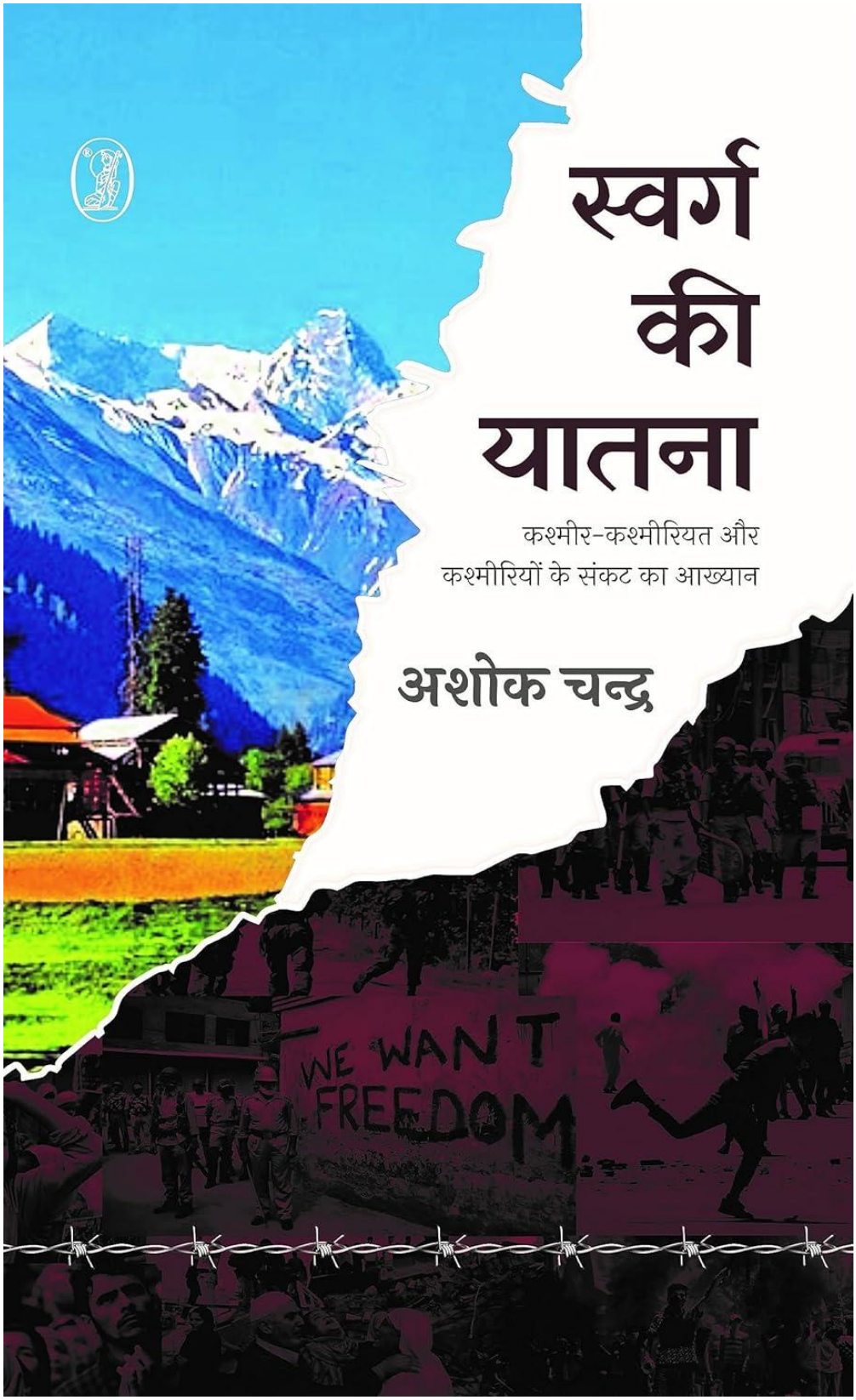

(परिग्रहण संख्या-S20698)

सारांश - "14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान की आज़ादी के तुरन्त बाद कश्मीर रियासत का पाकिस्तान राज्य से किया गया यथावत् समझौता (Stand Still Agreement) ऐसी ही योजना की दिशा में उठाया गया क़दम था। महाराजा की इच्छा भारतीय राज्य से भी यथावत समझौते की थी परन्तु भारत का ऐसा करना, कश्मीर को अपने समकक्ष, राज्य को मान्यता देना होता है जो तत्कालीन नेतृत्व को मंज़ूर नहीं था। उसका यह विचार तकनीकी रूप से उचित भी था। यह अलग बात है कि कश्मीर को हड़पने के मामले में पाकिस्तान का सब्रेक़रार बहुत जल्दी टूट गया और समझौते का उल्लंघन करते हुए उसने सैन्य अभियान को हरी झण्डी दे दी (बलोचिस्तान का उदाहरण भी सामने है, जिससे पाकिस्तान ने यथावत समझौता तोड़ जनवरी 1948 में जबरन राज्य में मिला लिया था, जिसका विरोध आज तक जारी हैं) अक्टूबर 1947 में कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण ने महाराजा को विवश कर दिया कि उन्हें स्वतन्त्र राज्य के अस्तित्ववादी विचार को छोड़ भारत से सैन्य सहायता माँगनी पड़ी। ज़ाहिर था कि भारतीय राज्य को रियासत के विलयन के बिना यह सहायता मुहैया कराना मंजूर नहीं होता। अन्ततः 26 अक्टूबर 1947 को कश्मीर भारतीय राज्य का अंग बन गया। यहाँ से कहानी कैसे मोड़ लेती है, उसे आप किताब में पढ़ेंगे। - अपनी बात से"

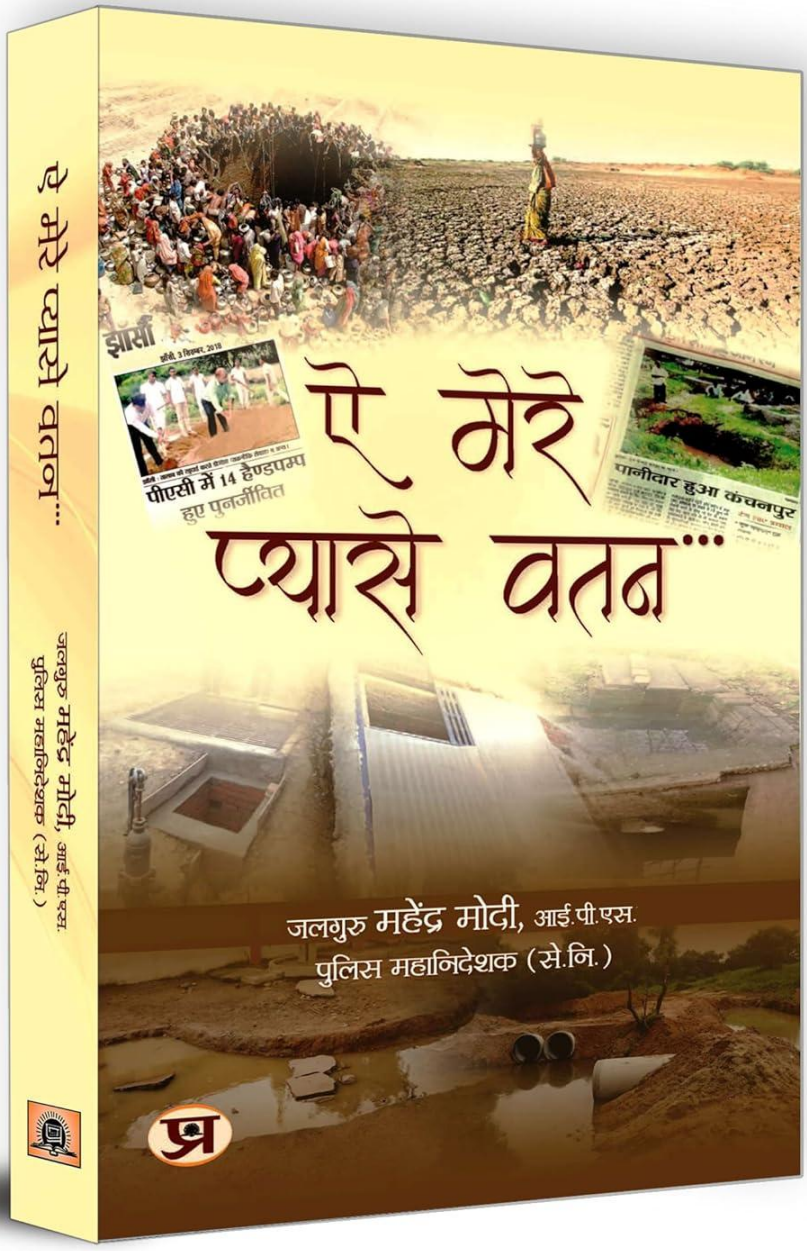

(परिग्रहण संख्या-S20697)

सारांश - पुस्तक 'ऐ मेरे प्यासे वतन' नई पीढ़ी के लिए जल संरक्षण का पासवर्ड है। जलगुरु महेंद्र मोदी ने अपने अवकाश के दिनों में लगातार जल संरक्षण की विभिन्न विधाओं और तकनीकों पर व्यावहारिक रिसर्च करके जल अभाव की विकराल समस्या का पूर्ण समाधान दिया है। प्रदूषण रहित, किफायती, सरल तकनीक व रख-रखाव की सुगमता आम आदमी की जरूरतें हैं। कानूनी तौर पर तो जल संरक्षण सबके लिए अनिवार्य है, लेकिन आम आदमी किसके पास जाए ? मितव्ययी तरीके कहाँ से सीखे ? कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए पेरिस समझौता 2015 व बाद के निर्धारित लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करे ? इन सभी समस्याओं का समाधान लेखक की पुस्तकों में है।

लेखक ने पेयजल तथा वर्षाजल के उपयोगी प्रबंधन के लिए मितव्ययी, प्रदूषणमुक्त, कम जमीन व कम समय में सुखद परिणाम देनेवाले व्यावहारिक व कार्यरत मॉडल दिया। इस मॉडल से पूरे देश को वर्तमान प्रणाली की अपेक्षा अत्यंत कम खर्च में पेयजल उपलब्ध कराना तथा अर्थोपार्जन संभव है। इस मॉडल को अपनाने से पूरे देश को लगभग 2.5 से 5 खरब किलोवाट बिजली की बचत प्रतिवर्ष होगी ।

पुस्तकें पढ़ें, जल संरक्षण सिस्टम स्वयं बनाएँ और अपनी प्यारी संतानों को सबसे महत्वपूर्ण उपहार दें - 'जल सुरक्षा कवच' का।

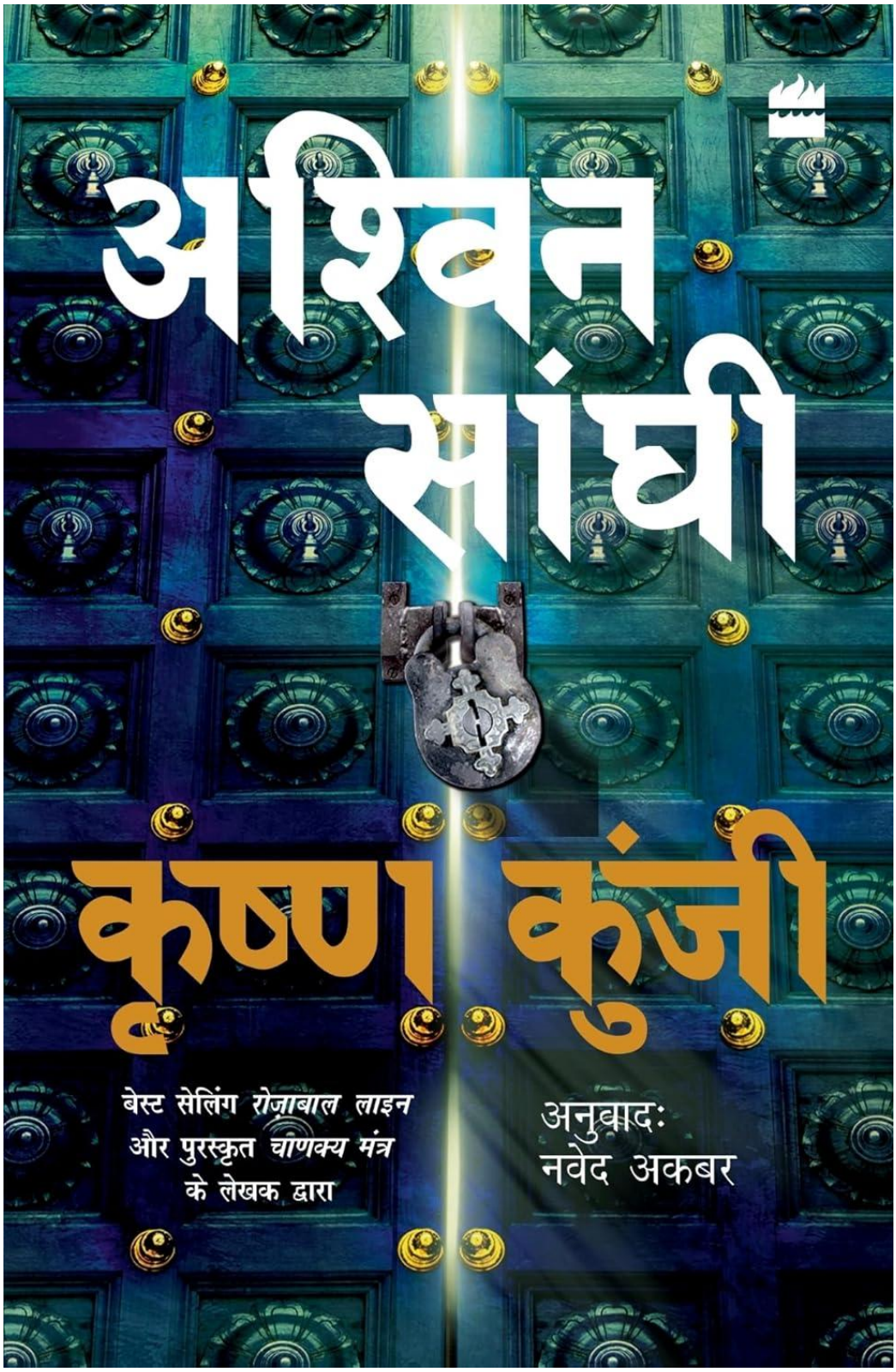

(परिग्रहण संख्या-S20696)

सारांश - पांच हजार साल पहले , पृथ्वी पर कृष्ण नामक एक जादुई व्यक्ति आया , जिसने मानव जाति की भलाई के लिए असंख्य चमत्कार किए। अगर नीला भगवान मर जाता तो मानवता अपने भाग्य से निराश थी , लेकिन उसे आश्वस्त किया गया कि वह अंतिम अंधकार युग-कलियुग में जरूरत पड़ने पर एक नए अवतार में वापस आएगा।

आधुनिक समय में, एक गरीब छोटा अमीर लड़का यह विश्वास करते हुए बड़ा होता है कि वह अंतिम अवतार है।

बस, वह एक सीरियल किलर है.

इस दिल दहला देने वाली कहानी में , एक हत्यारे का आगमन जो भगवान के नाम पर अपनी भयानक और शानदार ढंग से सोची-समझी योजनाओं को अंजाम देता है, एक प्राचीन रहस्य-कृष्ण की अमूल्य विरासत को मानव जाति के सामने उजागर करने की एक भयावह साजिश का पहला सुराग है।

इतिहासकार रवि मोहन सैनी को कृष्ण की सबसे बेशकीमती संपत्ति के रहस्यमय स्थान की खोज में , द्वारका के जलमग्न अवशेषों और सोमनाथ के रहस्यमय लिंगम से कैलाश पर्वत की बर्फीली ऊंचाइयों तक सांस रोककर जाना होगा। कालीबंगन के रेत से धोए गए खंडहरों से लेकर औरंगजेब द्वारा नष्ट किए गए वृन्दावन मंदिर तक , सैनी को न्याय की भारी गड़बड़ी को रोकने के लिए प्राचीनता में भी जाना होगा।

अश्विन सांघी आपके लिए कथानक का एक और विस्तृत शोधपूर्ण विवरण लेकर आए हैं , साथ ही वैदिक युग की एक अविश्वसनीय वैकल्पिक व्याख्या भी प्रदान करते हैं, जो साजिश के शौकीनों और थ्रिलर-आदी दोनों को समान रूप से पसंद आएगी।

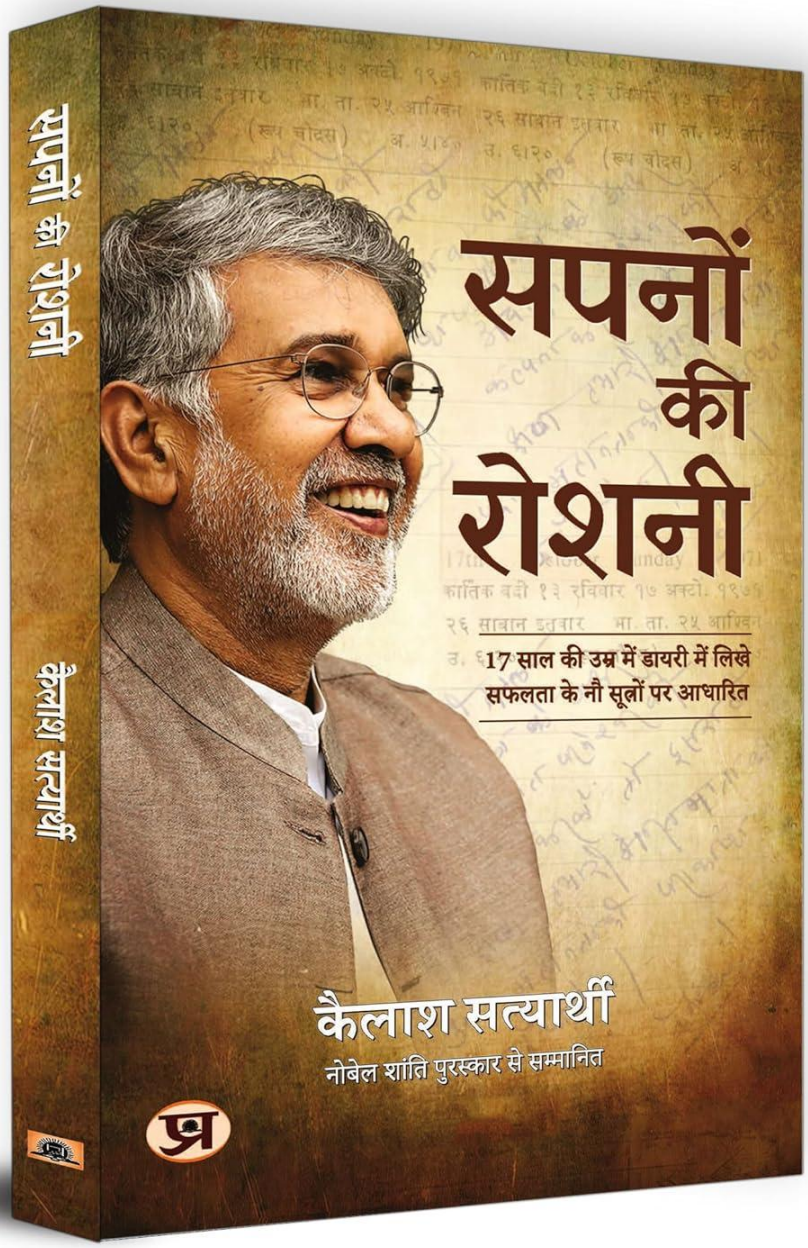

(परिग्रहण संख्या-S20695)

सारांश - एक छोटे शहर और सामान्य परिवेश से निकलकर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित अंतरराष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति बनने तक के लेखक श्री कैलाश सत्यार्थी के अनुभवों पर आधारित यह पुस्तक पाठकों के लिए एक बेशकीमती उपहार हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक में कोई उपदेश नहीं दिए गए हैं। इसमें ऐसी ढेरों कहानियाँ हैं , जिनके माध्यम से लेखक ने सिखाया है कि आशा और निराशा , स्पष्टता और असमंजस, सफलता और असफलता, खुशी और दुःख, आसानी और मुश्किलें, चिंताएँ और मस्ती जैसे सारे अनुभवों के बीच सहज भाव से आगे बढ़ते हुए सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ी जा सकती हैं।

श्री कैलाश सत्यार्थी ने बहुत सुंदर तरीके से और जीवन के उदाहरणों के माध्यम से समझाया है कि यदि जीवन का फोकस 'क्या बनना है' की जगह 'क्या करना है', की तरफ मोड़ दिया जाए तो उसके चमत्कारी परिणाम हो सकते हैं। उन्होंने मात्र 17 साल की उम्र में जीवन के अपने कुछ सूत्र तय कर लिये थे और परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी रही हों , उन सूत्रों को उन्होंने मजबूती से थामे रखा; और परिणाम सामने है। इसलिए हमने उन जीवन - सूत्रों को 'सफलता के सूत्र' कहा है और पूरा विश्वास है पुस्तक पढ़ने के बाद आप भी इस मत से सहमत होंगे।

हम सब जानते हैं कि सत्यार्थीजी व्यावसायिक लेखक या उपदेशक नहीं हैं , बल्कि अपना जीवन एक कर्मयोद्धा की तरह जीते हुए उन्होंने सफलता और सिद्धि के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। इसलिए यह पुस्तक किसी के लिए भी एक गेमचेंचर बनेगी।

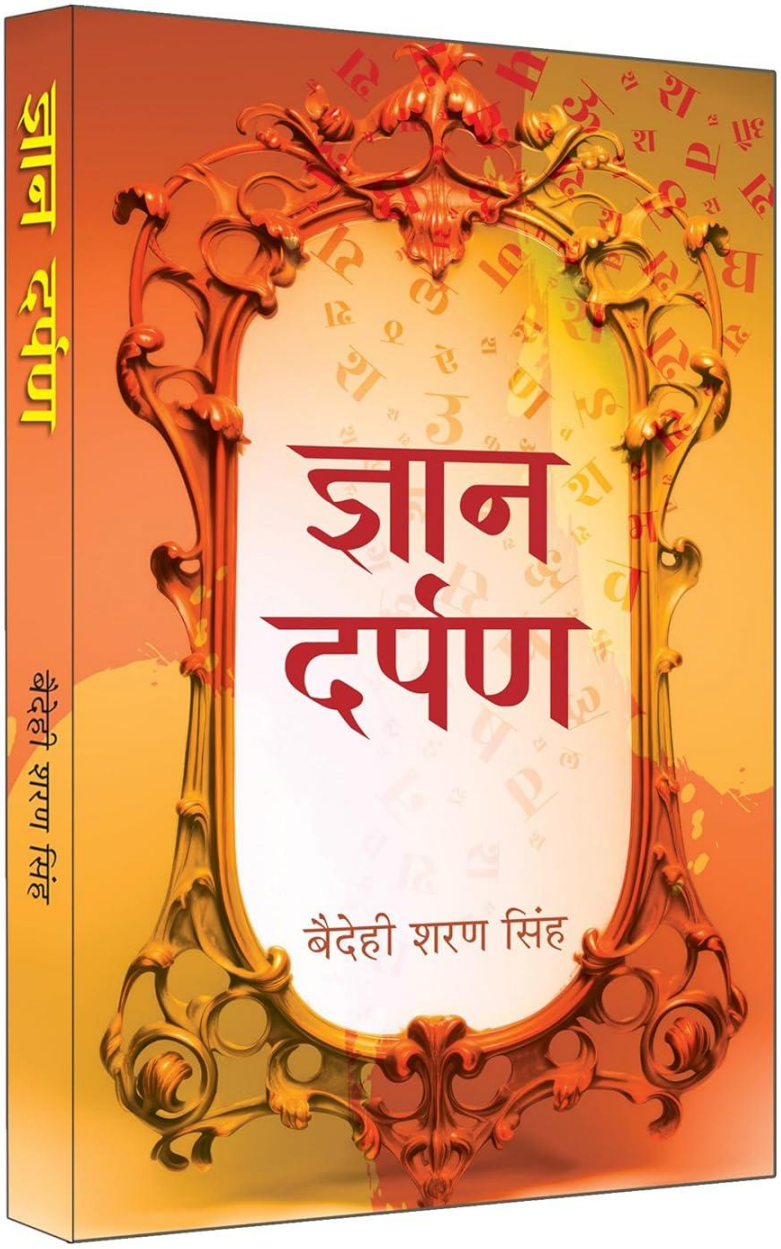

(परिग्रहण संख्या-S20694)

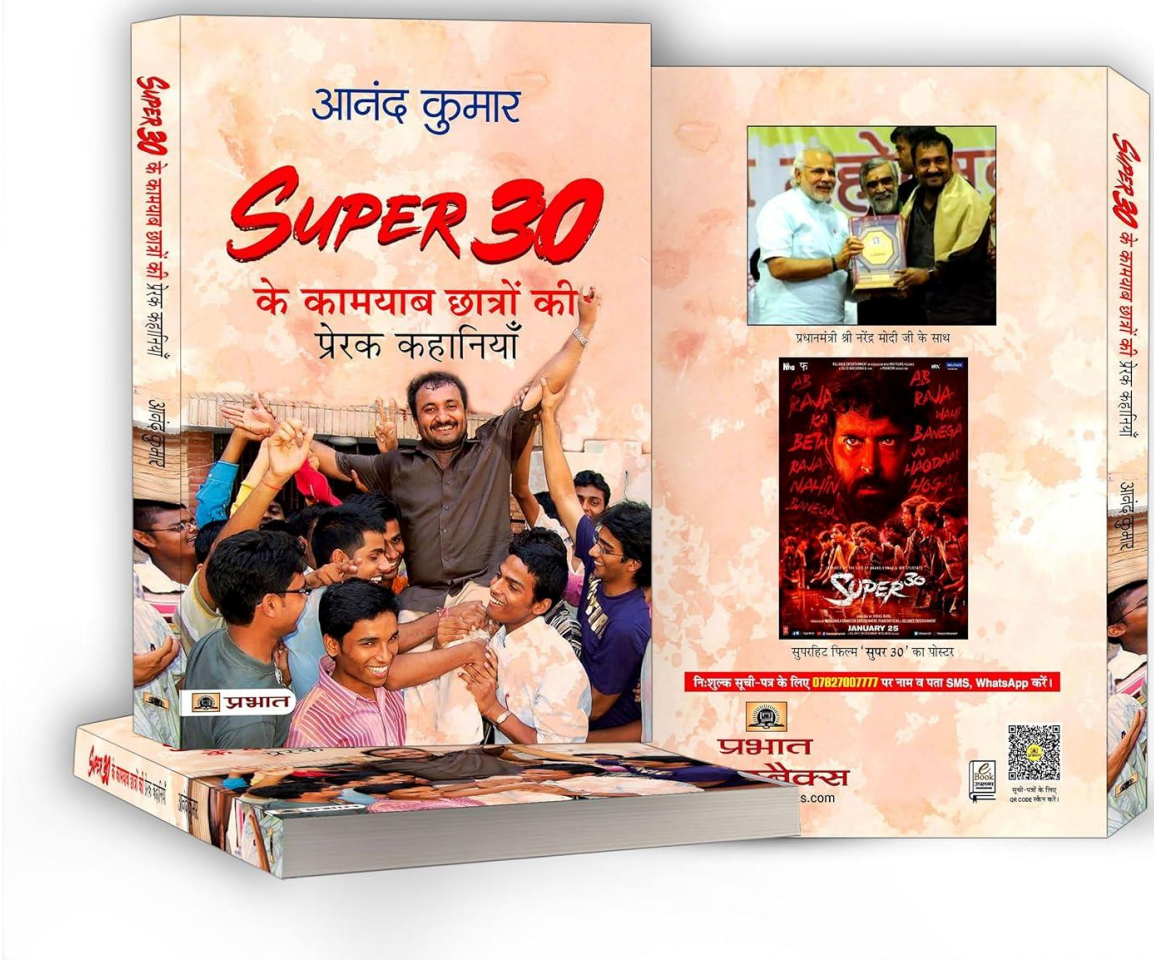

(परिग्रहण संख्या-S20693)

सारांश - आनंद कुमार का सपना विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का था, लेकिन धन के अभाव में चयन होने के बाद भी वे कैंब्रिज में पढ़ने का अपना सपना पूरा नहीं कर सके। चलो, अच्छा ही हुआ। जब उन्होंने भारत के अतीत काल की उच्च शिक्षा प्रणाली पर अनुसंधान किया तो अंतरात्मा से प्रेरणा मिली कि वे अपना सपना तो पूरा न कर सके , लेकिन यदि भारत में रहकर गरीब व साधनहीन छात्रों के उच्च तथा तकनीकी शिक्षा के सपनों को साकार करने में योगदान दें तो इससे उन छात्रों का सपना तो पूरा होगा ही , साथ ही उनके सपने के माध्यम से वे अपना सपना पूर्ण होते देख सकेंगे और इसी का परिणाम है सुपर 30।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित सभी कहानियाँ पूर्णतः वास्तविक हैं और उन छात्रों की संघर्ष-गाथाएँ हैं, जिन्होंने गरीबी और तंगहाली की स्थिति में भी कड़ी मेहनत , ईमानदारी एवं संघर्ष का रास्ता अपनाया और नए-नए मुकाम हासिल करके न केवल अपने परिवार का नाम रोशन किया , वरन् देश को भी गौरवान्वित किया। परिश्रम, पुरुषार्थ, लगन, जिजीविषा और स्वह्श्वन साकार करने की शुभ संकल्प शक्ति का यशोगान हैं ये प्रेरक 'सुपर 30 कहानियाँ'।

(परिग्रहण संख्या-S20692)

सारांश - सदियाँ बीत जाने के बावजूद मनुष्य की आकांक्षाएँ और कमज़ोरियाँ पहले जैसी बनी हुई हैं। ग्रीन अतीत की उन मूल्यवान शिक्षाओं को सामने लाते हैं जो लोगों को प्रेरित करने वाली सच्चाई को उजागर करती हैं, और वे हमें सीख देते हैं कि कामयाबी और शक्ति के लिए ज्ञान का उपयोग कैसे किया जाए। वे हमें बताते हैं कि हम अपनी भावनाओं को कैसे अनुशासित करें और दूसरे लोगों के मुखौटों को भेदकर उनका असली चेहरा कैसे देखें। यह पुस्तक चरित्र-निर्माण, अपने स्याह पक्ष का सामना करने, समूह के आकर्षण का प्रतिरोध करने और अपने ध्येय का बोध हासिल करने से सम्बन्धित शिक्षाओं से भरी है। चाहे आप अपने कार्य-स्थल पर हों , रिश्ता निभा रहे हों, या अपने आसपास की दुनिया को समझने और गढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों , ग्रीन इन सभी मोर्चों के लिए सफलता, विजय और आत्मरक्षा की उत्कृष्ट युक्तियाँ पेश करते हैं - एक ऐसी मार्गदर्शिका के रूप में जिसकी मदद से आप अपने सर्वाधिक शक्तिशाली रूप को सामने ला सकें।

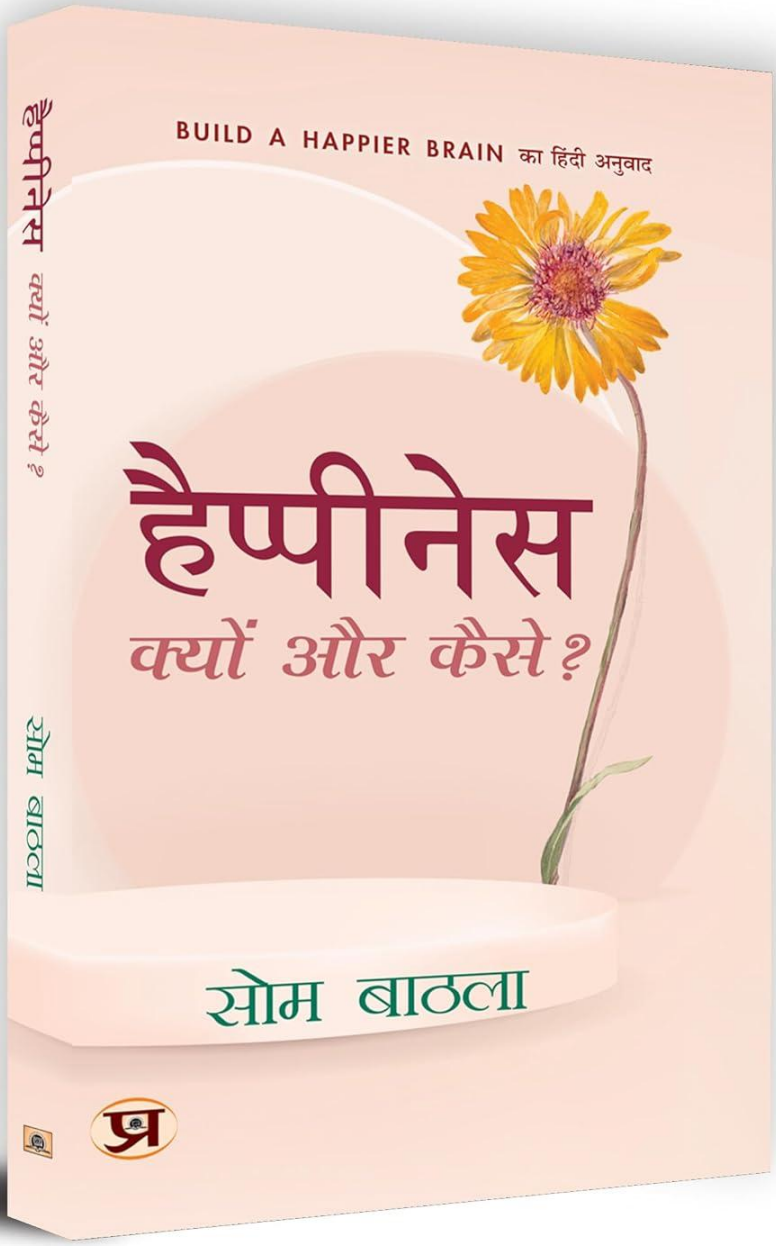

(परिग्रहण संख्या-S20691)

सारांश - जब आपके सर्वश्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद चीजें आपकी इच्छा के अनुरूप नहीं होती हैं, तब क्या आप तनावग्रस्त और चिंतित महसूस करते हैं ? या अपने कुछ लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं , फिर भी खुशी लंबे समय तक नहीं टिकती तो क्या आप हारा हुआ महसूस करते हैं और सोचने में विफल हो जाते हैं ? अधिकांश लोगों के लिए खुशी हासिल करना जीवन भर की एक चुनौती बनी रहती है, क्योंकि वे गलत जगह पर खुशी की तलाश करते हैं।

क्या आप जानना चाहते हैं कि वास्तव में खुशी कैसे मिलती है? वास्तव में खुशी की शुरुआत आप से ही होती है— जब आप खुश होने का फैसला करते हैं। मनोविज्ञान , तंत्रिका विज्ञान और खुशी की कला सीखें, प्रभावशाली आदतों के स्वामी बनें और बिना शर्त खुशी की स्थिति को आमंत्रित करें।

इस पुस्तक 'हैप्पीनेस : क्यों और कैसे ?' में एक सिद्धांत है , जो खुश रहने के कई व्यावहारिक तरीके भी बताती है। इसके साथ ही यह भी बताता है कि अपने व्य€तगत जीवन, कामकाजी जीवन और संबंधों में खुशी को किस प्रकार दैनिक आदतों से आमंत्रित किया जाए।

जीवन की सच्ची खुशी पाने के व्यावहारिक मंत्र बतानेवाली पठनीय पुस्तक , जिसे पढ़कर पाठक अपने जीवन को सार्थकता दे पाएँगे।

Trucking Business Management

Cases and Concepts

DEBJIT ROY
G. RAGHURAM
REKHA JAIN
SANJEEV TRIPATHI
KIRTI SHARDA

Mc Graw Hill Education

(Accession No. S 20674)

Abstract: Trucking Business Management is a compilation of cases authored by professors and researchers of IIM Ahmedabad in the field of road transportation. It is an attempt to fill the business-practice gap and impart a professional approach towards enabling the trucking business to grow. This book offers a collection of cases and related reading material. It will serve as a good resource for learning in the courses related to trucking, transport and logistics management. It will also be useful for managers in the transport industry and researchers in the field.

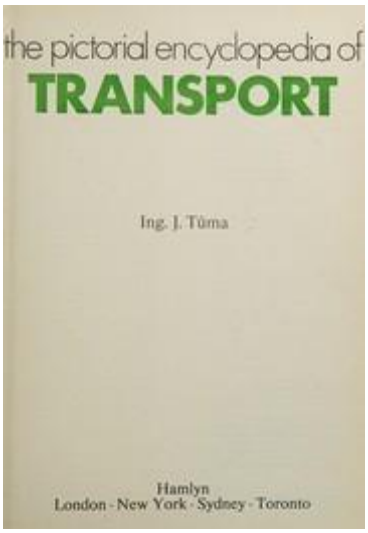

(Accession No. S 20672)

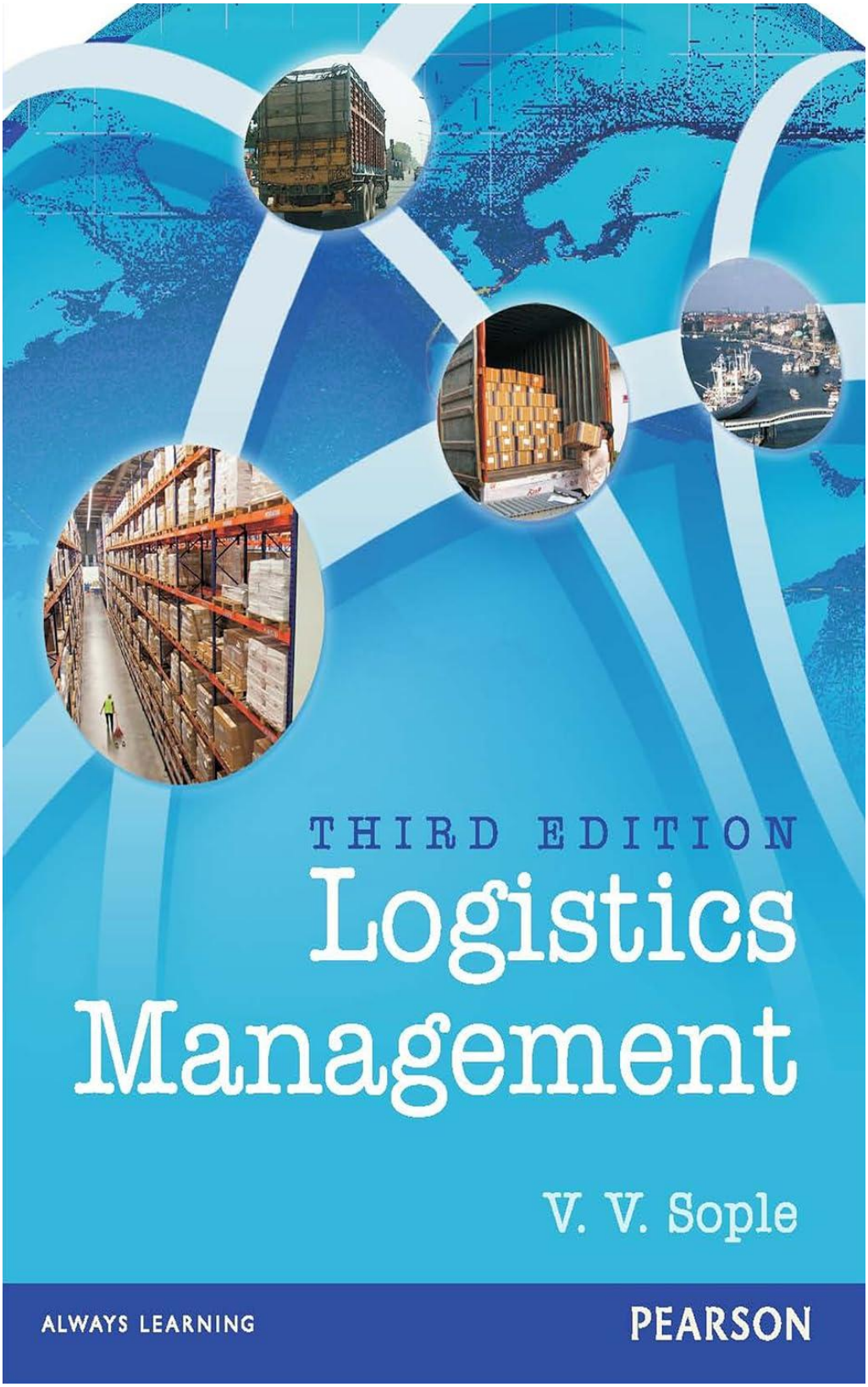

(Accession No. S 20630 & S20631)

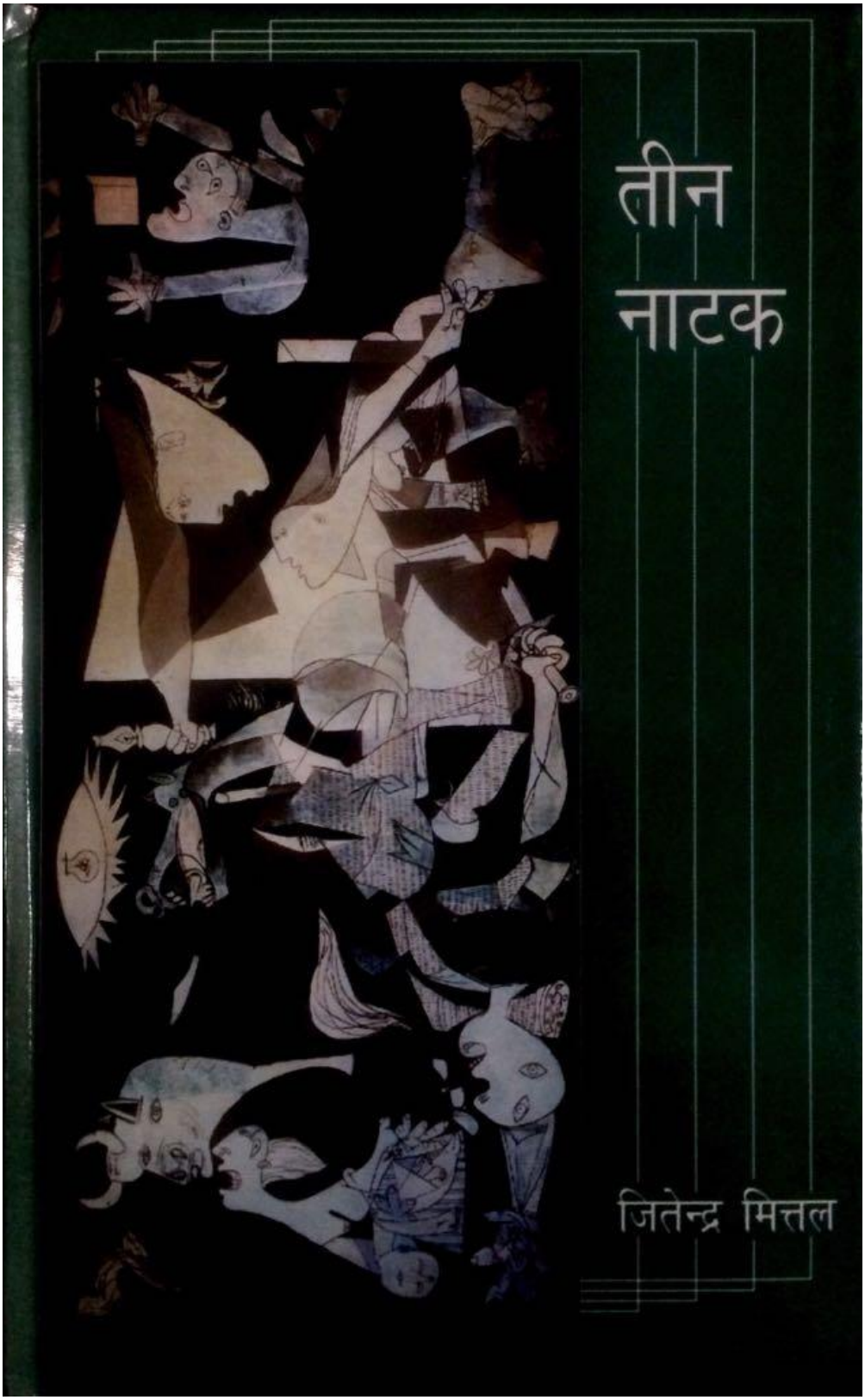

(परिग्रहण संख्या-S20665)

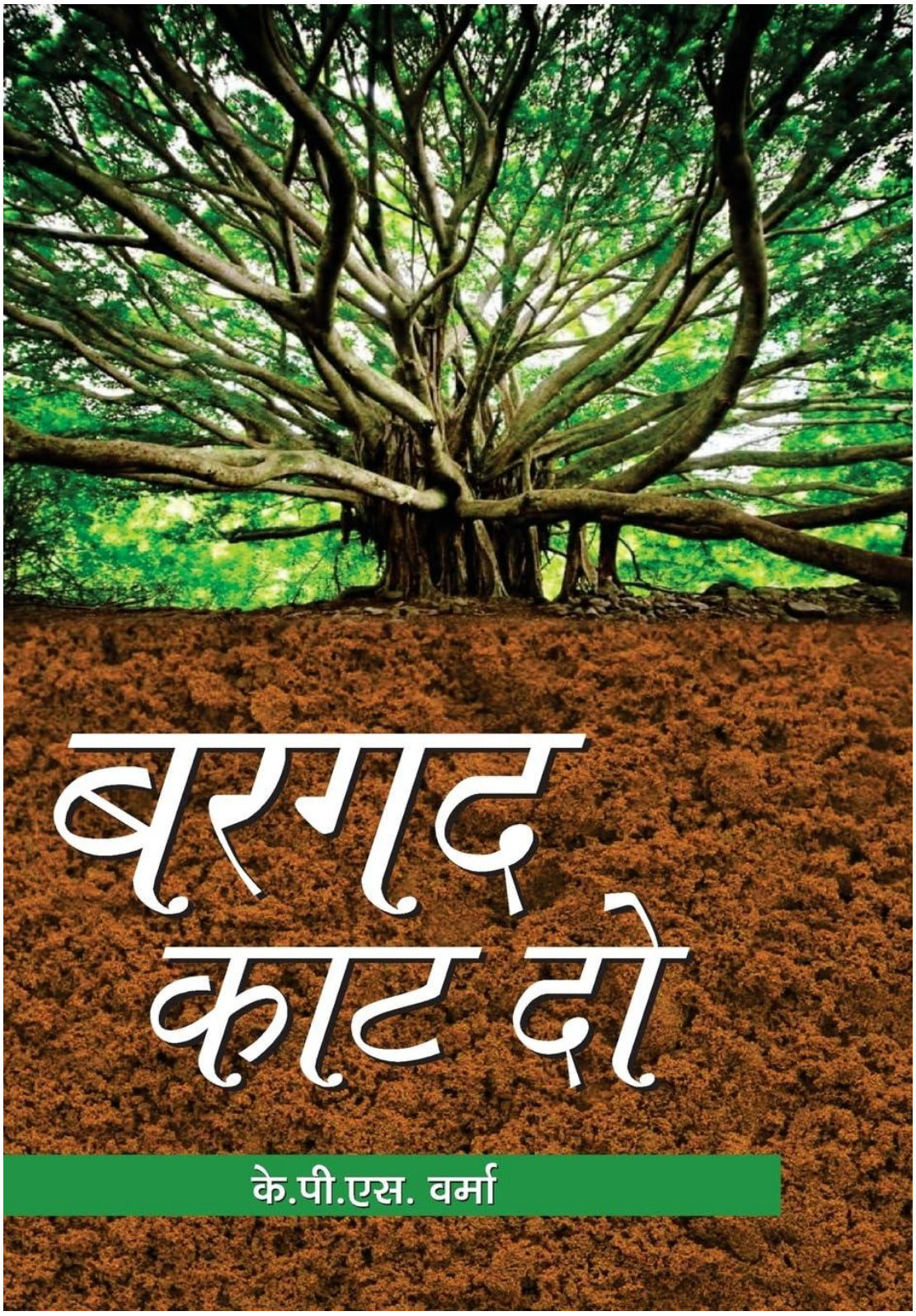

(परिग्रहण संख्या-S20663)

सारांश - कहानी संग्रह का शीर्षक बरगद काट दो संग्रह की एक कहानी का भी शीर्षक है। इस कहानी का सारांश यह है कि हम एक विविधता भरे समाज में रहते हैं , जिसके फलने-फूलने के लिए आपसी सद्भाव और भाईचारा जरूरी है। लेकिन विविधता कुछ परिस्थितियों में बिना व्यक्तिगत हानि पहुँचानेवाले लोगों के लिए नफरत भी पैदा कर सकती है। और दिल में नफरत का बीज पड़ जाता है तो कालांतर में वह बरगद के पेड़ की तरह हमारे दिल में फैलकर प्यार और अन्य कोमल भावनाओं के लिए जगह नहीं छोड़ता। इस नफरत के बरगद को काटना जरूरी है। पूरी पुस्तक में लगभग सभी कहानियाँ सामाजिक सद्भाव , आपसी भाईचारा और अपने समूह से ऊपर उठकर व्यक्तिगत संबंधों को तरजीह देने और धार्मिक, जातीय या क्षेत्रीय कट्टरता को परे करने का संदेश देती हैं। आपसी प्यार हमें इन सबसे ऊपर उठाता है। कुछ कहानियों में समाज में फैले अंधविश्वासों पर भी करारी चोट है।

इस विविधता में एकता की बेल को सिंचित करने में लेखक कितना सफल है , यह पाठक तय करेंगे।

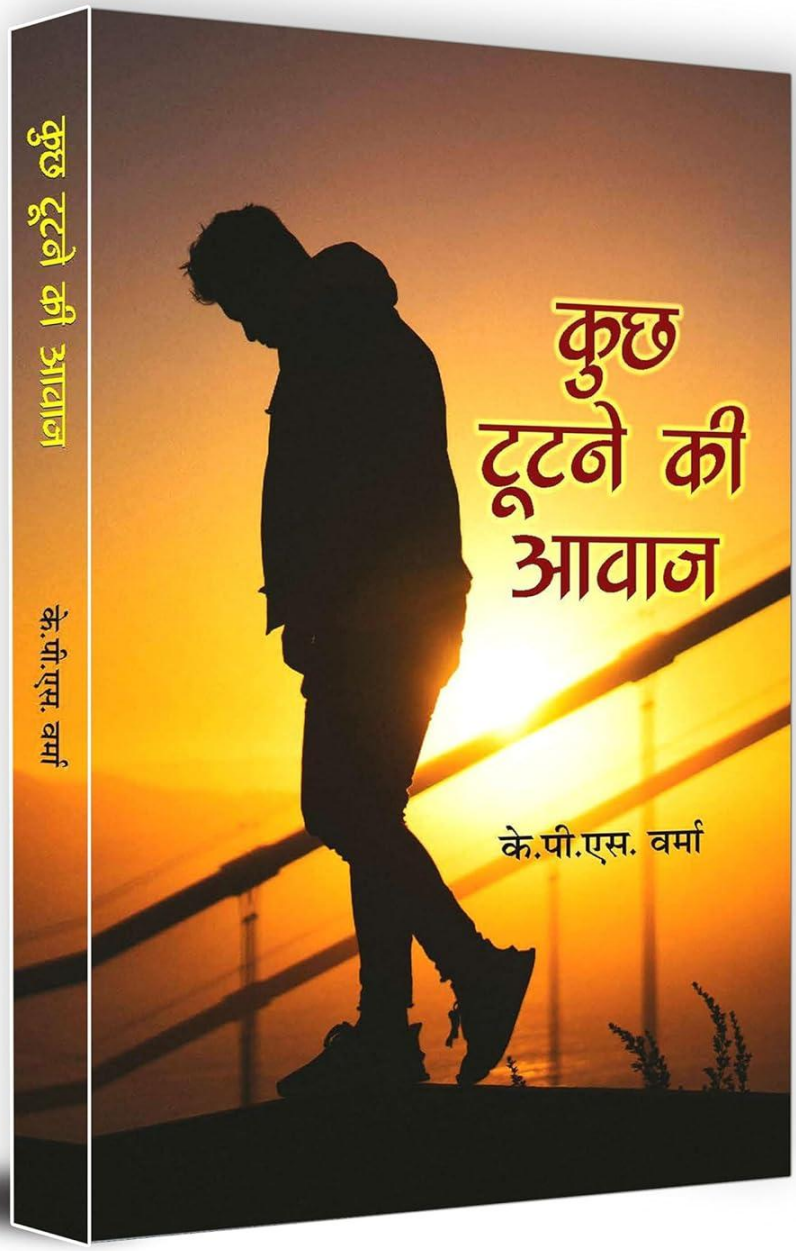

(परिग्रहण संख्या-S20662)

सारांश - प्रस्तुत कहानी-संग्रह 'कुछ टूटने की आवाज' की अधिकतर कहानियों में कोमल भावों, जैसे जमीर, भरोसा, ह्रश्वयार, मनोबल, धैर्य, सरलता आदि के आहत होने या टूटने-बिखरने से मची अंदरूनी उथलपुथल और उससे उपजी भावनाओं में बहकर किए गए बाह्य कार्यकलापों का काल्पनिक चित्रण है।टूटने से आवाज होती है। फिर टूटने वाली वह चीज भले ही भौतिक अस्तित्व रखती हो, जैसे क्रॉकरी, शीशा, पत्थर अथवा फर्नीचर या जिसका भौतिक अस्तित्व न हो, जैसे भरोसा, जमीर, मनोबल या ह्रश्वयार। दोनों के टूटने पर मन दुखता है। दोनों तरह की चीजों के टूटने की आवाज हमारा ध्यान अपनी ओर खींचती है; कुछ करने के लिए कहती है।भौतिक वस्तुओं के टूटने के बाद हम उन्हें मरम्मत कराकर ठीक कर लें या यदि हमारे पास पैसा है तो उन्हें कूड़ेदान में फेंककर दूसरी खरीद लें। हमारे व्यक्तित्व की अभौतिक चीजों के टूटने पर भरपाई इतनी आसान नहीं होती। जमीर, भरोसा, ह्रश्वयार और मनोबल किसी भी कीमत पर बाजार में नहीं मिलते। उन्हें सिर्फ जोड़ा जा सकता है, और जोडऩे पर भी गाँठ पड़ जाती है। इसलिए इन्हें सँभालकर रखें।

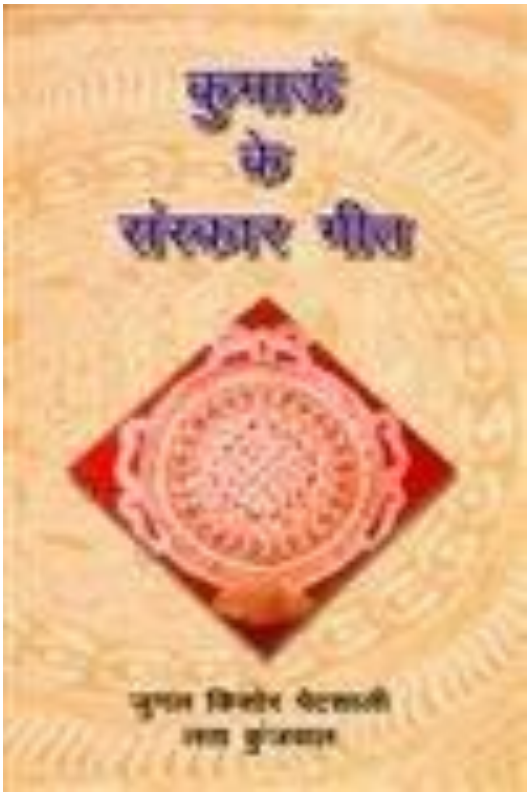

(परिग्रहण संख्या-S20658)

छीनियों का दंश

नंदल हितैषी

(परिग्रहण संख्या-S20645)

(परिग्रहण संख्या-S20644)

(परिग्रहण संख्या-S20641)

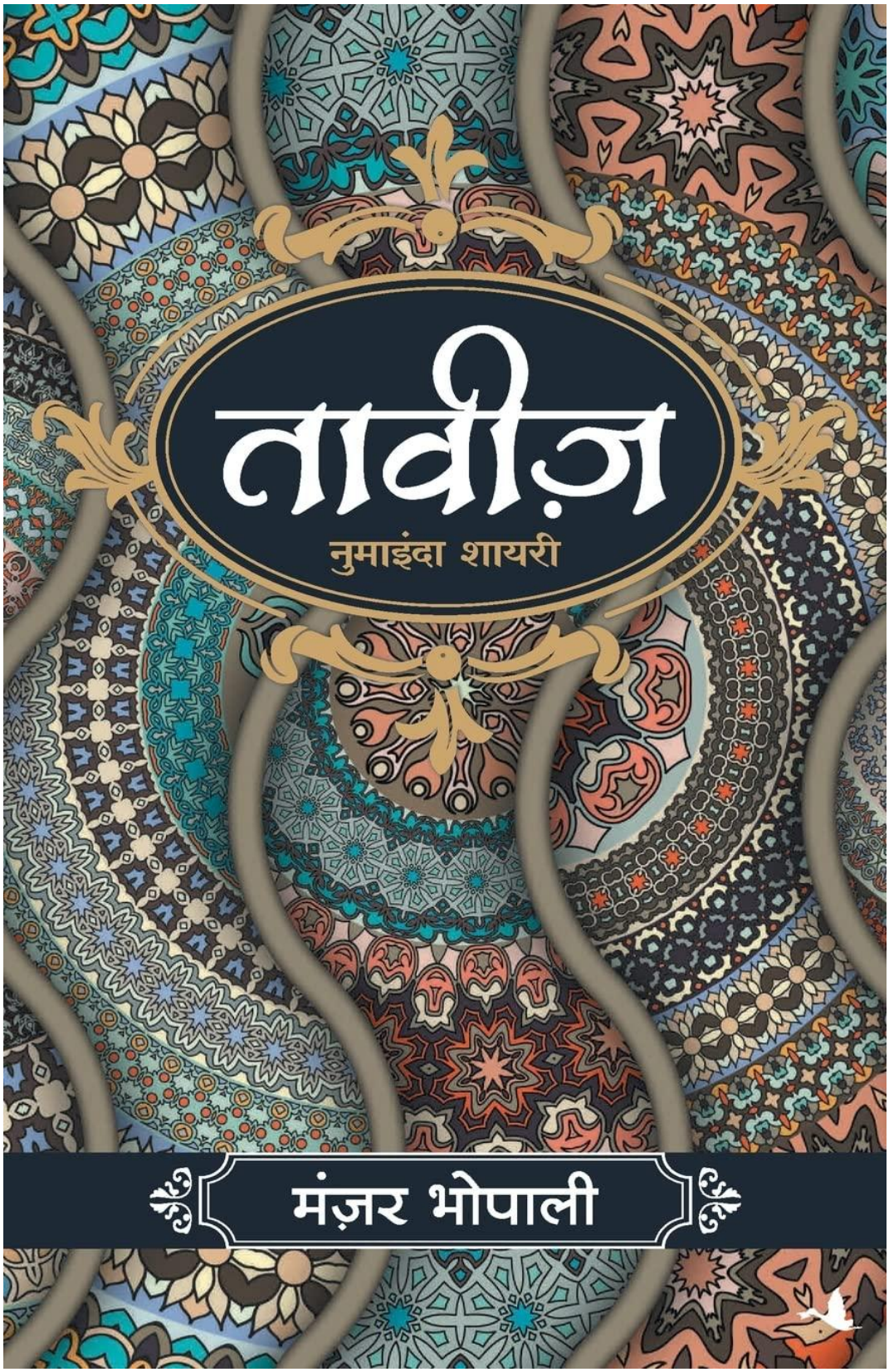

(परिग्रहण संख्या-S20640)

सारांश - कोई शिकवा कोई किस्सा पुराना ढूँढ लेते हैं हम उन से रोज़ मिलने का बहाना ढूँढ लेते हैं ख़ुशी और ग़म मैं जीने का सलीक़ा जिनको आता है ख़िज़ाँ की रुत में भी मौसम सुहाना ढूँढ लेते हैं दलीलें कितनी ही दीजे वो क़ायल ही नहीं होते सताने के लिए कुछ भी बहाना ढूँढ लेते हैं नज़र से उसकी बच जाओगे ख़ुशफ़हमी में मत रहना ख़ुदा के तीर खिड़ अपना निशाँ ढूँढ लेते हैं 'मंज़र' की हौसलामन्द तबियत चन्द मुशायरों पर अपनी छाप छोड़ के मुत्मईन नहीं हो सकी. वह तो एक सदी पर अपनी छाप छोड़ना चाहते हैं. 'मंज़र' की उलुलअज़मी मैं वही मासूमियत है जो उस बच्चे की हुकुम में पाई जाती है जो br>चाँद को पकड़ने के लिए मान की गोद में बार-बार मचलता है. मुशायरों के नाम पर आजकल जो मेले लगते हैं उनमें कामयाबी के लिए , 'मंज़र' भोपाली की आवाज़ काफ़ी है. खुशगुलुई के साथ-साथ उनके यहाँ फ़िक्र भी पाई जाती है और अपने माहौल, अपने ज़माने से बाख़बर भी हैं. उन्हें यह हक़ पहुँचता है कि वह बढ़ जाने कि कोशिश करें, अगर वह ऐसा करें तो मेरी दुआएं उनके साथ हैं. -कैफ़ी आज़मी.

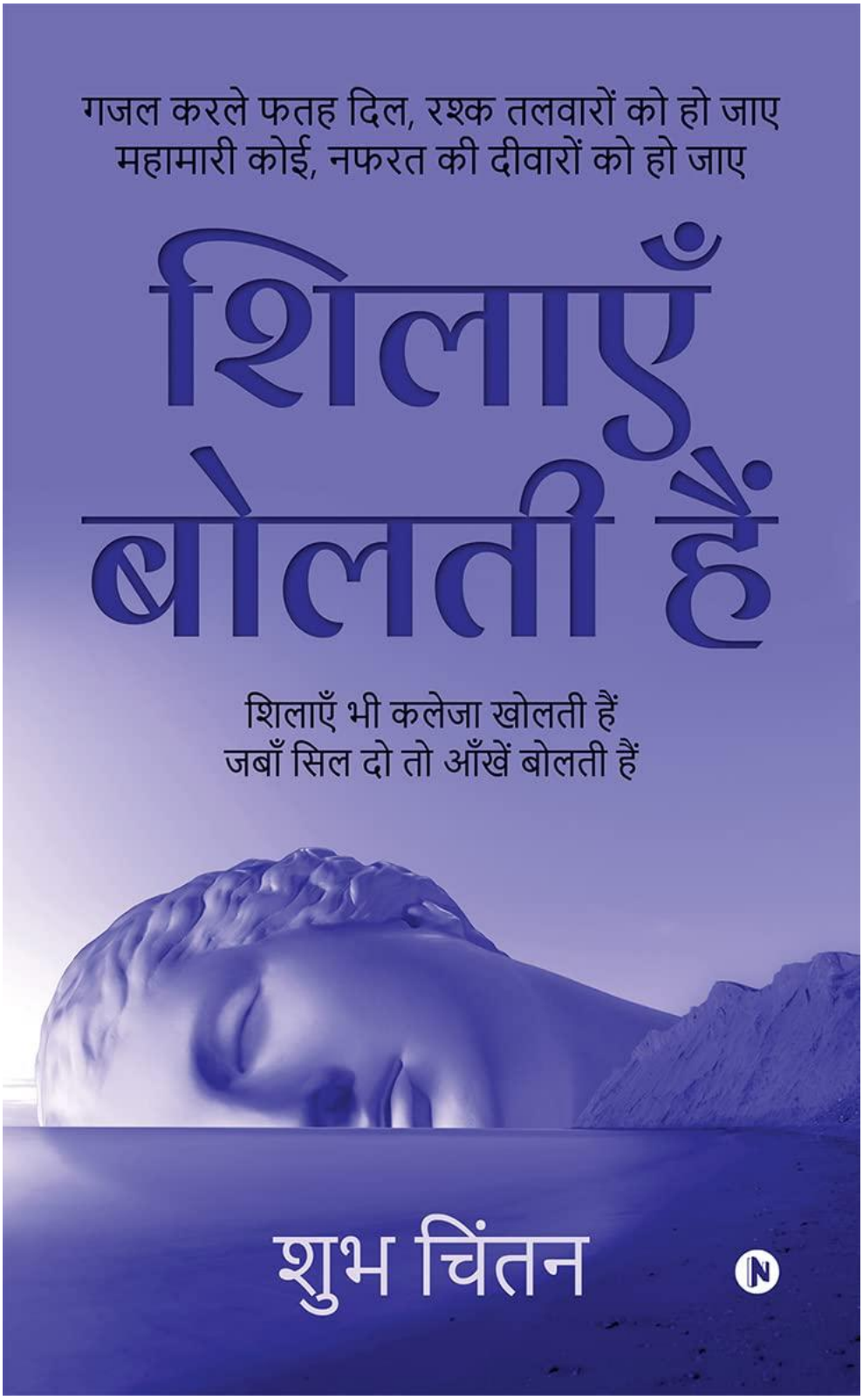

(परिग्रहण संख्या-S20636)

सारांश – कविता वंचितों और वंचितों की आवाज बननी चाहिए न कि केवल मनोरंजन के लिए। इसे समाज में व्यापक रूप से व्याप्त अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए एक हथियार के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। शायरी के दायरे में भी ग़ज़ल अभिव्यक्ति का सबसे आकर्षक स्वरूप है। ग़ज़ल अपनी अन्तर्निहित लय के कारण पाठक से तुरंत रिश्ता स्थापित कर लेती है।

यह कुछ हद तक सच है कि ग़ज़ल को अभी भी एक उर्दू घटना के रूप में मान्यता प्राप्त है क्योंकि वे उल्लेखनीय कवियों द्वारा लिखी गई हैं , जिनमें कठिन उर्दू शब्द शामिल हैं जिन्हें कई भारतीय कविता प्रेमियों के लिए समझना मुश्किल हो सकता है। यदि हमें बार-बार उर्दू मुहावरों के अर्थ खोजने पड़ें तो उनसे निकलने वाला आकर्षण कम हो जाता है। हम ग़ज़लों में अधिक हिंदी और यहाँ तक कि संस्कृत शब्दों को शामिल करके उन्हें अधिक 'भारतीय' क्यों नहीं बना सकते ? किसे अधिक से अधिक सरल शब्दों का प्रयोग करने वाली 'हिन्दी ग़ज़ल' लिखनी चाहिए? इस पुस्तक में ग़ज़ल का भारतीयकरण करने का ईमानदार प्रयास किया गया है।

इसके अलावा, चल रहे आज़ादी का अमृत महोत्सव को देखते हुए , इस पुस्तक में 'हिंद' पर कुछ कविताएँ शामिल की गई हैं।

(परिग्रहण संख्या-S20634)

(परिग्रहण संख्या-S20633)

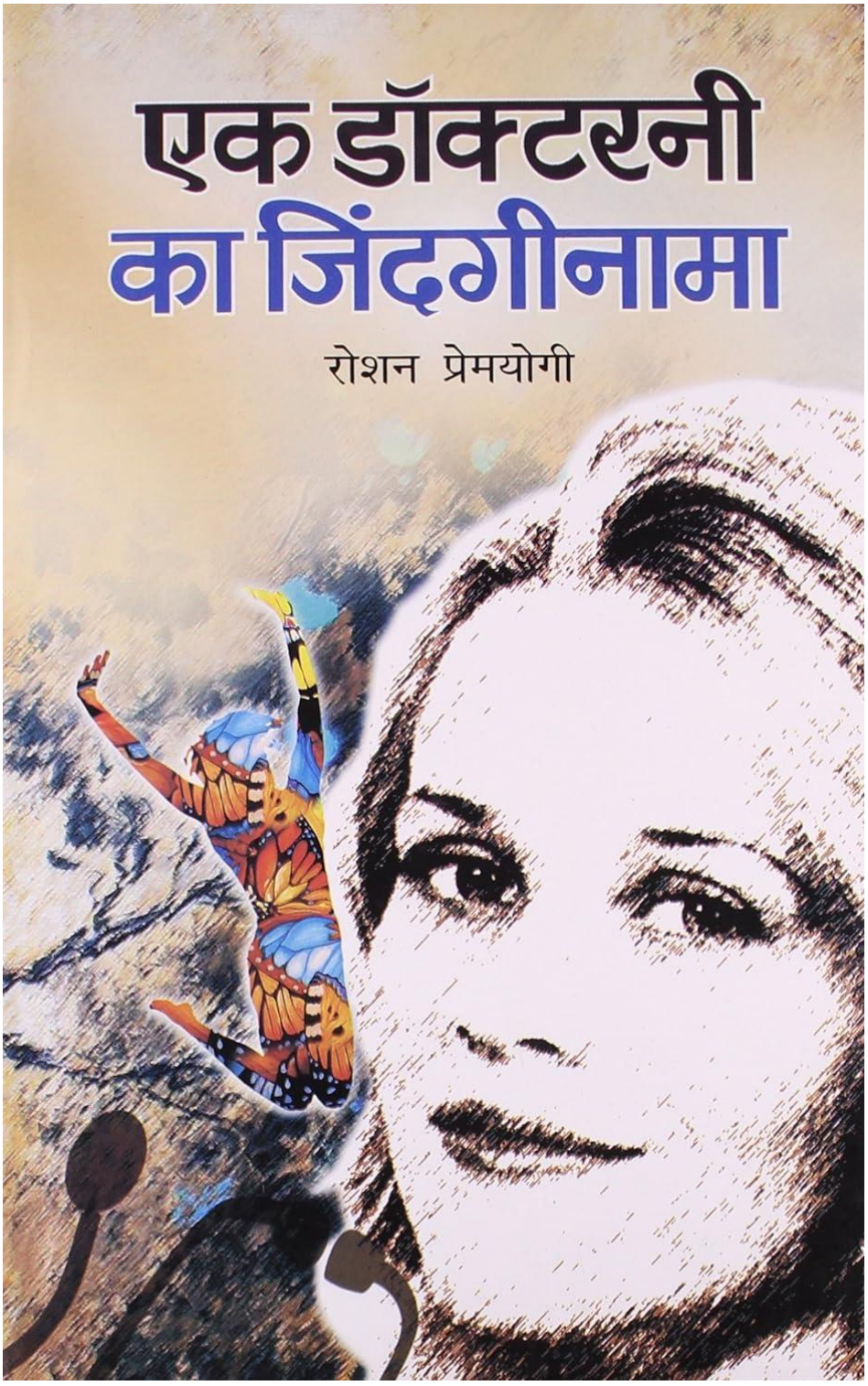

(परिग्रहण संख्या-S20632)

(मुकेश कुमार, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक द्वारा संकलित और तैयार किया गया)